وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ﴿۷۳﴾ ع

और मुसल्मान औरतों की और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

اٰیاتها ۵۴ ۳۴ سُوْرَةُ سَبَاٍ مَّكِّيَّةٌ ۵۸ رکوعاتها ۶

सूरए सबा मक्किय्या है, इस में चव्वन आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्‌रबान रह्‌म वाला[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِی

सब ख़ूबियां अल्लाह को कि उसी का माल है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[2] और आख़िरत में उसी की

الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ ﴿۱﴾ یَعْلَمُ مَا یَلِجُ فِی الْاَرْضِ وَمَا

ता'रीफ़ है[3] और वोही हिक्मत वाला ख़बरदार जानता है जो कुछ ज़मीन में जाता है[4] और जो

یَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا یَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا یَعْرُجُ فِیْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِیْمُ

ज़मीन से निकलता है[5] और जो आस्मान से उतरता है[6] और जो उस में चढ़ता है[7] और वोही है मेह्‌रबान

الْغَفُوْرُ ﴿۲﴾ وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِیْنَا السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّیْ

बख़्शिश वाला और काफ़िर बोले हम पर क़ियामत न आएगी[8] तुम फ़रमाओ क्यूं नहीं मेरे रब की क़सम

لَتَاْتِیَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَیْبِ ۚ لَا یَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِی السَّمٰوٰتِ

बेशक ज़रूर तुम पर आएगी ग़ैब जानने वाला[9] उस से ग़ाइब नहीं ज़र्रा भर कोई चीज़ आस्मानों में

शिर्क ज़ाहिर हो और अल्लाह तआ़ला उन्हें अ़ज़ाब फ़रमाए और मोमिनीन जो अमानत के अदा करने वाले हैं उन के ईमान का इज़्हार हो और अल्लाह तबारक व तआ़ला उन की तौबा क़बूल फ़रमाए और उन पर रह़मत व मग़्फ़िरत करे अगर्चे उन से बा'ज़ त़ाआ़त में कुछ तक़्सीर भी हुई हो। (خازن) 1 : सूरए सबा मक्की है सिवाए आयत "وَیَرَی الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ" इस में छ[6] रुकूअ़, चव्वन आयतें और आठ सो तेंतीस कलिमे, एक हज़ार पांच सो बारह ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी हर चीज़ का मालिक ख़ालिक़ और ह़ाकिम अल्लाह तआ़ला है और हर ने'मत उसी की त़रफ़ से है तो वोही ह़म्दो सना का मुस्तह़िक़ और सज़ावार है 3 : या'नी जैसा दुन्या में ह़म्द का मुस्तह़िक़ अल्लाह तआ़ला है वैसा ही आख़िरत में भी ह़म्द का मुस्तह़िक़ वोही है क्यूं कि दोनों जहान उसी की ने'मतों से भरे हुए हैं, दुन्या में तो बन्दों पर उस की ह़म्दो सना वाजिब है क्यूं कि येह दारुत्तक्लीफ़ है और आख़िरत में अहले जन्नत ने'मतों के सुरूर और राह़तों की ख़ुशी में उस की ह़म्द करेंगे। 4 : या'नी ज़मीन के अन्दर दाख़िल होता है जैसे कि बारिश का पानी और मुर्दे और दफ़ीने 5 : जैसे कि सब्ज़ा और दरख़्त और चश्मे और कानें और ब वक़्ते ह़श्र मुर्दे 6 : जैसे कि बारिश, बर्फ़, ओले, और त़रह़ त़रह़ की बरकतें और फ़िरिश्ते 7 : जैसे कि फ़िरिश्ते और दुआएं और बन्दों के अ़मल 8 : या'नी उन्हों ने क़ियामत के आने का इन्कार किया। 9 : या'नी मेरा रब ग़ैब का जानने वाला है उस से कोई चीज़ मख़्फ़ी नहीं तो क़ियामत का आना और उस के क़ाइम होने का वक़्त भी उस के इ़ल्म में है।

www.dawateislami.net

وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَاۤ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ

और न ज़मीन में और न उस से छोटी न बड़ी मगर एक साफ़ बताने वाली

مُّبِيْنٍ ۙ ﴿٣﴾ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

किताब में है[10] ताकि सिला दे उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये येह हैं जिन के लिये

مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٤﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ

बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी[11] और जिन्हों ने हमारी आयतों में हराने की कोशिश की[12] उन

لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ﴿٥﴾ وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْۤ

के लिये सख़्त अज़ाबे दर्दनाक में से अज़ाब है और जिन्हें इल्म मिला[13] वोह जानते हैं कि जो

اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ

कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा[14] वोही हक़ है और इज़्ज़त वाले सब ख़ूबियों सराहे की

الْحَمِيْدِ ﴿٦﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا

राह बताता है और काफ़िर बोले[15] क्या हम तुम्हें ऐसा मर्द बता दें[16] जो तुम्हें ख़बर दे कि जब

مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۚ ﴿٧﴾ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ

तुम पुर्ज़े हो कर बिल्कुल रेज़ा रेज़ा हो जाओ तो फिर तुम्हें नया बनना है क्या अल्लाह पर उस ने झूट

كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ

बांधा या उसे सौदा (जुनून) है[17] बल्कि वोह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते[18] अज़ाब

وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ﴿٨﴾ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ

और दूर की गुमराही में हैं तो क्या उन्हों ने न देखा जो उन के आगे और पीछे है

السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ

आस्मान और ज़मीन[19] हम चाहें तो उन्हें[20] ज़मीन में धंसा दें या उन पर आस्मान

10 : या'नी लौहे़ मह़फ़ूज़ में 11 : जन्नत में। 12 : और उन में ता'न कर के और उन को शे'रो सेह़र वग़ैरा बता कर लोगों को उन से रोकना चाहा (इस का मज़ीद बयान इसी सूरत के आख़िर रुकूअ़ पांच में आएगा।) 13 : या'नी अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم या मोमिनीने अहले किताब मिस्ल अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के साथियों के 14 : या'नी कुरआने मजीद 15 : या'नी काफ़िरों ने आपस में मुतअ़ज्जिब हो कर कहा : 16 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم। 17 : जो वोह ऐसी अ़जीबो ग़रीब बातें कहते हैं। अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ार के इस मक़ूले का रद फ़रमाया कि येह दोनों बातें नहीं, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इन दोनों से मुबर्रा हैं। 18 : या'नी

www.dawateislami.net

ع ۷

كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِیْبٍ ﴿۹﴾ وَ لَقَدْ

का टुकड़ा गिरा दें बेशक इस[21] में निशानी है हर रुजूअ़ लाने वाले बन्दे के लिये[22] और बेशक

اٰتَیْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ یٰجِبَالُ اَوِّبِیْ مَعَهٗ وَ الطَّیْرَ ۚ وَ اَلَنَّا لَهُ الْحَدِیْدَ ۙ﴿۱۰﴾

हम ने दावूद को अपना बड़ा फ़ज़्ल दिया[23] ऐ पहाड़ो उस के साथ अल्लाह की त़रफ़ रुजूअ़ करो और ऐ परिन्दो[24] और हम ने उस के लिये लोहा नर्म किया[25]

اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّ قَدِّرْ فِی السَّرْدِ وَ اعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

कि वसीअ़ ज़िरहें बना और बनाने में अन्दाज़े का लिह़ाज़ रख[26] और तुम सब नेकी करो बेशक मैं तुम्हारे काम

بَصِیْرٌ ﴿۱۱﴾ وَ لِسُلَیْمٰنَ الرِّیْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّ رَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَ اَسَلْنَا

देख रहा हूं और सुलैमान के बस में हवा कर दी उस की सुब्ह़ की मन्ज़िल एक महीने की राह और शाम की मन्ज़िल एक महीने की राह[27] और हम ने उस

لَهٗ عَیْنَ الْقِطْرِ ؕ وَ مِنَ الْجِنِّ مَنْ یَّعْمَلُ بَیْنَ یَدَیْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَ

के लिये पिघले हुए तांबे का चश्मा बहाया[28] और जिन्नों में से वोह जो उस के आगे काम करते उस के रब के हुक्म से[29] और

काफ़िर बअ़्स व ह़िसाब का इन्कार करने वाले। **19 :** या'नी क्या वोह अन्धे हैं कि उन्हों ने आस्मान व ज़मीन की त़रफ़ नज़र ही नहीं डाली और अपने आगे पीछे देखा ही नहीं जो उन्हें मा'लूम होता कि वोह हर त़रफ़ से इह़ाते़ में हैं और ज़मीन व आस्मान के अक़्त़ार से बाहर नहीं जा सकते और मुल्के ख़ुदा से नहीं निकल सकते और उन्हें भागने की कोई जगह नहीं, उन्हों ने आयात और रसूल की तक्ज़ीब व इन्कार के दह्शत अंगेज़ जुर्म का इरतिकाब करते हुए ख़ौफ़ न खाया और अपनी इसी ह़ालत का ख़याल कर के न डरे। **20 :** उन की तक्ज़ीब व इन्कार की सज़ा में क़ारून की त़रह़ **21 :** नज़र व फ़िक्र **22 :** जो दलालत करती है कि अल्लाह तआ़ला बअ़्स पर और इस के मुन्किर के अ़ज़ाब पर और हर शै पर क़ादिर है। **23 :** या'नी नुबुव्वत और किताब और कहा गया है मुल्क और एक क़ौल येह है कि हुस्ने सौत वग़ैरा तमाम चीज़ें जो आप को ख़ुसूसिय्यत के साथ अ़त़ा फ़रमाई गईं और अल्लाह तआ़ला ने पहाड़ों और परिन्दों को हुक्म दिया : **24 :** जब वोह तस्बीह़ करें उन के साथ तस्बीह़ करो। चुनान्चे, जब ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام तस्बीह़ करते तो पहाड़ों से भी तस्बीह़ सुनी जाती और परिन्द झुक आते, येह आप का मो'जिज़ा था। **25 :** कि आप के दस्ते मुबारक में आ कर मिस्ल मोम या गूंधे हुए आटे के नर्म हो जाता और आप उस से जो चाहते बिग़ैर आग के और बिग़ैर ठोंके पीटे बना लेते। इस का सबब येह बयान किया गया है कि जब आप बनी इसराईल के बादशाह हुए तो आप का त़रीक़ा येह था कि आप लोगों के ह़ालात की जुस्तजू के लिये इस त़रह़ निकलते कि लोग आप को न पहचानें और जब कोई मिलता और आप को न पहचानता तो उस से आप दरयाफ़्त करते कि दावूद कैसा शख़्स है ? सब लोग ता'रीफ़ करते। अल्लाह तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता ब सूरते इन्सान भेजा, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से भी ह़स्बे आ़दत येही सुवाल किया तो फ़िरिश्ते ने कहा कि दावूद हैं तो बहुत ही अच्छे आदमी काश उन में एक ख़स्लत न होती। इस पर आप मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया कि बन्दए ख़ुदा कौन सी ख़स्लत ? उस ने कहा कि वोह अपना और अपने अहलो इ़याल का ख़र्च बैतुल माल से लेते हैं। येह सुन कर आप के ख़याल में आया कि अगर आप बैतुल माल से वज़ीफ़ा न लेते तो ज़ियादा बेहतर होता, इस लिये आप ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की, कि इन के लिये कोई ऐसा सबब कर दे जिस से आप अपने अहलो इ़याल का गुज़ारा करें और बैतुल माल से आप को बे नियाज़ी हो जाए। आप की येह दुआ़ मुस्तजाब हुई और अल्लाह तआ़ला ने आप के लिये लोहे को नर्म किया और आप को सन्अ़ते ज़िरह साज़ी का इ़ल्म दिया। सब से पहले ज़िरह बनाने वाले आप ही हैं, आप रोज़ाना एक ज़िरह बनाते थे वोह चार हज़ार को बिकती थी, उस में से अपने और अपने अहलो इ़याल पर भी ख़र्च फ़रमाते और फ़ुक़रा व मसाकीन पर भी सदक़ा करते। इस का बयान आयत में है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हम ने दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के लिये लोहा नर्म कर के उन से फ़रमाया **26 :** कि उस के ह़ल्क़े यक्सां और मुतवस्सित़ हों, न बहुत तंग न फ़राख़। **27 :** चुनान्चे आप सुब्ह़ को दिमश्क़ से रवाना होते तो दोपहर को क़ैलूला इस्त़ख़्र में फ़रमाते जो मुल्के फ़ारस में है और दिमश्क़ से एक महीने की राह पर है और शाम को इस्त़ख़्र से रवाना होते तो शब को काबुल में आराम फ़रमाते येह भी तेज़ सुवार के लिये एक महीने का रास्ता है। **28 :** जो तीन रोज़ सर ज़मीने यमन में पानी की त़रह़ जारी रहा। और एक क़ौल येह है कि हर महीने में तीन रोज़ जारी रहता था। और एक क़ौल येह है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लिये तांबे को पिघला दिया जैसा कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के लिये लोहे को नर्म किया था। **29 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया

www.dawateislami.net

مَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿١٢﴾ يَعْمَلُوْنَ

जो उन में हमारे हुक्म से फिरे[30] हम उसे भड़क्ती आग का अ़ज़ाब चखाएंगे उस के लिये बनाते

لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ

जो वोह चाहता ऊंचे ऊंचे महल[31] और तस्वीरें[32] और बड़े हौज़ों के बराबर लगन[33] और लंगर दार

رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿١٣﴾

देगें[34] ऐ दावूद वालो शुक्र करो[35] और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ

फिर जब हम ने उस पर मौत का हुक्म भेजा[36] जिन्नों को उस की मौत न बताई मगर ज़मीन की दीमक ने

تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ

कि उस का अ़सा खाती थी फिर जब सुलैमान ज़मीन पर आया जिन्नों की हक़ीक़त खुल गई[37] अगर ग़ैब जानते होते[38]

مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿١٤﴾ لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ

तो इस ख़्वारी के अ़ज़ाब में न होते[39] बेशक सबा[40] के लिये उन की आबादी में[41] निशानी थी[42]

कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लिये जिन्नात को मुती़अ़ किया। **30 :** और हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की फ़रमां बरदारी न करे **31 :** और आ़लीशान इ़मारतें और मस्जिदें और उन्हीं में से बैतुल मक़्दिस भी है **32 :** दरिन्दों और परिन्दों वग़ैरा की तांबे और बिल्लोर और पथ्थर वग़ैरा से और उस शरीअ़त में तस्वीर बनाना हराम न था। **33 :** इतने बड़े कि एक लगन में हज़ार आदमी खाते। **34 :** जो अपने पायों पर क़ाइम थीं और बहुत बड़ी थीं ह़त्ता कि अपनी जगह से हटाई नहीं जा सकती थीं सीढ़ियां लगा कर उन पर चढ़ते थे येह यमन में थीं अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हम ने फ़रमाया कि **35 :** अल्लाह तआ़ला का उन ने'मतों पर जो उस ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाई उस की इ़त़ाअ़त बजा ला कर। **36 :** हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की थी कि उन की वफ़ात का ह़ाल जिन्नात पर ज़ाहिर न हो ताकि इन्सानों को मा'लूम हो जाए कि जिन्न ग़ैब नहीं जानते। फिर आप मेह़राब में दाख़िल हुए और ह़स्बे आ़दत नमाज़ के लिये अपने अ़सा पर तक्या लगा कर खड़े हो गए। जिन्नात ह़स्बे दस्तूर अपनी ख़िदमतों में मश्ग़ूल रहे और येह समझते रहे कि हज़रत ज़िन्दा हैं और हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का अ़र्सए दराज़ तक इसी ह़ालत पर रहना उन के लिये कुछ हैरत का बाइ़स नहीं हुवा क्यूं कि वोह बारहा देखते थे कि आप एक माह दो दो माह और इस से ज़ियादा अ़र्से तक इ़बादत में मश्ग़ूल रहते हैं और आप की नमाज़ बहुत दराज़ होती है ह़त्ता कि आप की वफ़ात के पूरे एक साल बा'द तक जिन्नात आप की वफ़ात पर मुत्त़लअ़ न हुए और अपनी ख़िदमतों में मश्ग़ूल रहे यहां तक कि ब हुक्मे इलाही दीमक ने आप का अ़सा खा लिया और आप का जिस्म मुबारक जो लाठी के सहारे से क़ाइम था ज़मीन पर आया, उस वक़्त जिन्नात को आप की वफ़ात का इ़ल्म हुवा। **37 :** कि वोह ग़ैब नहीं जानते **38 :** तो हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात से मुत्त़लअ़ होते **39 :** और एक साल तक इ़मारत के कामों में तक्लीफ़े शाक़्क़ा उठाते न रहते। मरवी है कि हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने बैतुल मक़्दिस की बिना (बुन्याद) उस मक़ाम पर रखी थी जहां हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ख़ैमा नस्ब किया गया था, उस इ़मारत के पूरा होने से क़ब्ल हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात का वक़्त आ गया तो आप ने अपने फ़रज़न्दे अरजुमन्द हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को इस की तक्मील की वसिय्यत फ़रमाई। चुनान्चे, आप ने शयात़ीन को इस की तक्मील का हुक्म दिया। जब आप की वफ़ात का वक़्त क़रीब पहुंचा तो आप ने दुआ़ की, कि आप की वफ़ात शयात़ीन पर ज़ाहिर न हो ताकि वोह इ़मारत की तक्मील तक मसरूफ़े अ़मल रहें और उन्हें जो इ़ल्मे ग़ैब का दा'वा है वोह बात़िल हो जाए। हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की उ़म्र शरीफ़ तिरपन साल की हुई, तेरह साल की उ़म्र शरीफ़ में आप सरीर आराए सल्त़नत हुए, चालीस साल हुक्मरानी फ़रमाई। **40 :** सबा अ़रब का एक क़बीला है जो अपने जद के नाम से मश्हूर है और वोह जद सबा बिन यश्जुब बिन या'रुब बिन क़ह़्त़ान है। **41 :** जो हुदूदे यमन में वाक़ेअ़ थी **42 :** अल्लाह तआ़ला की वह्दानिय्यत व क़ुदरत पर दलालत करने

www.dawateislami.net

جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ؕ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ

दो बाग़ दहने और बाएं[43] अपने रब का रिज़्क़ खाओ[44] और उस का शुक्र अदा करो[45]

بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿١٥﴾ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ

पाकीज़ा शहर[46] बख़्शने वाला रब[47] तो उन्हों ने मुंह फेरा[48] तो हम ने उन पर ज़ोर का अहला (सैलाब)

الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ

भेजा[49] और उन के बाग़ों के इवज़ दो बाग़ उन्हें बदल दिये जिन में बुक्टा मेवा[50] और झाउ (झाड़ी) और कुछ

مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿١٦﴾ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ؕ وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا

थोड़ी सी बेरियां[51] हम ने उन्हें येह बदला दिया उन की नाशुक्री[52] की सज़ा और हम किसे सज़ा देते हैं

الْكَفُوْرَ ﴿١٧﴾ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى

उसी को जो नाशुक्रा है और हम ने किये थे उन में[53] और उन शहरों में जिन में हम ने बरकत रखी[54] सरे राह

ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ؕ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿١٨﴾

कितने शहर[55] और उन्हें मन्ज़िल के अन्दाज़े पर रखा[56] उन में चलो रातों और दिनों अम्नो अमान से[57]

वाली और वोह निशानी क्या थी उस का आगे बयान होता है। **43 :** या'नी उन की वादी के दाहने और बाएं दूर तक चले गए और उन से कहा गया था **44 :** बाग़ ऐसे कसीरुस्समर (बहुत फलदार) थे कि जब कोई शख़्स सर पर टोकरा लिये गुज़रता तो बिग़ैर हाथ लगाए क़िस्म क़िस्म के मेवों से उस का टोकरा भर जाता। **45 :** या'नी इस ने'मत पर उस की ताअ़त बजा लाओ। **46 :** लतीफ़ आबो हवा, साफ़ सुथरी सर ज़मीन, न उस में मच्छर न मख्खी न खटमल न सांप न बिच्छू, हवा की पाकीज़गी का येह आ़लम कि अगर कहीं और का कोई शख़्स उस शहर में गुज़र जाए और उस के कपड़ों में जूएं हों तो सब मर जाएं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि शहरे सबा सन्आ़ से तीन फ़रसंग के फ़ासिले पर था। **47 :** या'नी अगर तुम रब की रोज़ी पर शुक्र करो और इताअ़त बजा लाओ तो वोह बख़्शिश फ़रमाने वाला है। **48 :** उस की शुक्र गुज़ारी से और अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام की तक्ज़ीब की। वहब का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन की तरफ़ तेरह नबी भेजे जिन्हों ने उन को हक़ की दा'वतें दीं और **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतें याद दिलाईं और उस के अ़ज़ाब से डराया मगर वोह ईमान न लाए और उन्हों ने अम्बिया को झुटला दिया और कहा कि हम नहीं जानते कि हम पर ख़ुदा की कोई भी ने'मत हो, तुम अपने रब से कह दो कि उस से हो सके तो वोह इन ने'मतों को रोक ले। **49 :** अ़ज़ीम सैलाब जिस से उन के बाग़ अम्वाल सब डूब गए और उन के मकानात रैत में दफ़्न हो गए और इस तरह तबाह हुए कि उन की तबाही अ़रब के लिये मसल बन गई। **50 :** निहायत बद मज़ा **51 :** जैसी वीरानों में जम आती हैं, इस तरह की झाड़ियों और वहशत नाक जंगल को जो उन के ख़ुशनुमा बाग़ों की जगह पैदा हो गया था ब तरीक़े मुशाकलत बाग़ फ़रमाया। **52 :** और उन के कुफ़्र **53 :** या'नी शहरे सबा में **54 :** कि वहां के रहने वालों को वसीअ़ ने'मतें और पानी और दरख़्त और चश्मे इनायत किये, मुराद इन से शाम के शहर हैं। **55 :** क़रीब क़रीब, सबा से शाम तक सफ़र करने वालों को इस राह में तोशा और पानी साथ ले जाने की ज़रूरत न होती। **56 :** कि चलने वाला एक मक़ाम से सुब्ह चले तो दोपहर को एक आबादी में पहुंच जाए जहां ज़रूरिय्यात के तमाम सामान हों और जब दोपहर को चले तो शाम को एक शहर में पहुंच जाए, यमन से शाम तक का तमाम सफ़र उसी आसाइश के साथ तै हो सके और हम ने उन से कहा कि **57 :** न रातों में कोई खटका न दिनों में कोई तक्लीफ़, न दुश्मन का अन्देशा न भूक प्यास का ग़म। मालदारों में हसद पैदा हुवा कि हमारे और ग़रीबों के दरमियान कोई फ़र्क़ ही नहीं रहा, क़रीब क़रीब की मन्ज़िलें हैं, लोग ख़िरामां ख़िरामां हवा ख़ोरी करते चले जाते हैं, थोड़ी देर के बा'द दूसरी आबादी आ जाती है, वहां आराम करते हैं न सफ़र में तकान (थकन) है न कोफ़्त, अगर मन्ज़िलें दूर होतीं, सफ़र की मुद्दत दराज़ होती, राह में पानी न मिलता, जंगलों और बयाबानों में गुज़र होता तो हम तोशा साथ लेते पानी के इन्तिज़ाम करते सुवारियां और ख़ुद्दाम साथ रखते, सफ़र का लुत्फ़ आता और अमीरो ग़रीब का फ़र्क़ ज़ाहिर होता, येह ख़याल कर के उन्हों ने कहा।

www.dawateislami.net

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ

तो बोले ऐ हमारे रब हमें सफ़र में दूरी डाल[58] और उन्हों ने खु़द अपना ही नुक़्सान किया तो हम ने उन्हें कहानियां कर दिया[59]

وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾ وَ

और उन्हें पूरी परेशानी से परागन्दा कर दिया[60] बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े सब्र वाले हर बड़े शुक्र वाले के लिये[61] और

لَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٠﴾

बेशक इब्लीस ने उन्हें अपना गुमान सच कर दिखाया[62] तो वोह उस के पीछे हो लिये मगर एक गुरौह कि मुसल्मान था[63]

وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ

और शैत़ान का उन पर[64] कुछ क़ाबू न था मगर इस लिये कि हम दिखा दें कि कौन आख़िरत पर ईमान लाता है और कौन

ع ۲ ۸ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾ ع قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ

इस से शक में है और तुम्हारा रब हर चीज़ पर निगहबान है तुम फ़रमाओ[65] पुकारो उन्हें जिन्हें

زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي

अल्लाह के सिवा[66] समझे बैठे हो[67] वोह ज़र्रा भर के मालिक नहीं आस्मानों में और न

الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَلَا

ज़मीन में और न उन का इन दोनों में कुछ हिस्सा और न अल्लाह का उन में से कोई मददगार और

تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ

उस के पास शफ़ाअ़त काम नहीं देती मगर जिस के लिये वोह इज़्न फ़रमाए यहां तक कि जब इज़्न दे कर उन के दिलों की घबराहट दूर फ़रमा दी जाती है

قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾ قُلْ مَنْ

एक दूसरे से[68] कहते हैं तुम्हारे रब ने क्या ही बात फ़रमाई वोह कहते हैं जो फ़रमाया ह़क़ फ़रमाया[69] और वोही है बुलन्द बड़ाई वाला तुम फ़रमाओ कौन

58 : या'नी हमारे और शाम के दरमियान जंगल और बयाबान कर दे कि बिगै़र तोशा और सुवारी के सफ़र न हो सके। 59 : बा'द वालों के लिये कि उन के अह़्वाल से इ़ब्रत ह़ासिल करें। 60 : क़बीला क़बीला मुन्तशिर हो गया, वोह बस्तियां ग़र्क़ हो गईं और लोग बे ख़ान्मां (बे सरो सामान) हो कर जुदा जुदा बिलाद में पहुंचे, ग़स्सान शाम में और अज़्द उ़म्मान में और खु़ज़ाआ़ तिहामा में और आले खु़ज़ैमा इ़राक़ में और औस व ख़ज़रज का जद अ़म्र बिन आ़मिर मदीना में। 61 : और सब्रो शुक्र मोमिन की सिफ़त है कि जब वोह बला में मुब्तला होता है सब्र करता है और जब ने'मत पाता है शुक्र बजा लाता है। 62 : या'नी इब्लीस जो गुमान रखता था कि बनी आदम को वोह शह्वत व ह़िर्स और ग़ज़ब के ज़रीए़ गुमराह कर देगा, येह गुमान उस ने अहले सबा पर बल्कि तमाम काफ़िरों पर सच्चा कर दिखाया कि वोह उस के मुत्तबेअ़ हो गए और उस की इत़ाअ़त करने लगे। ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि शैत़ान ने न किसी पर तलवार खींची न किसी पर कोड़े मारे झूटे वा'दों और बात़िल उम्मीदों से अहले बात़िल को गुमराह कर दिया। 63 : उन्हों ने उस का इत्तिबाअ़ न किया। 64 : जिन के ह़क़ में उस का गुमान पूरा हुवा 65 : ऐ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा के काफ़िरों से 66 : अपना मा'बूद 67 : कि वोह तुम्हारी मुसीबतें दूर करें लेकिन ऐसा नहीं हो सकता क्यूं कि किसी नफ़्अ़ व ज़रर में 68 : ब त़रीक़े इस्तिब्शार।

www.dawateislami.net

يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَ اِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى

जो तुम्हें रोज़ी देता है आस्मानों और ज़मीन से[70] तुम खुद ही फ़रमाओ अल्लाह[71] और बेशक हम या तुम[72] या तो ज़रूर

هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۴﴾ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ

हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में[73] तुम फ़रमाओ हम ने तुम्हारे गुमान में अगर कोई जुर्म किया तो उस की तुम से पूछ नहीं न तुम्हारे कौतकों

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ

(करतूतों) का हम से सुवाल[74] तुम फ़रमाओ हमारा रब हम सब को जम्अ करेगा[75] फिर हम में सच्चा फ़ैसला फ़रमा देगा[76] और वोही है

الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿۲۶﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ بَلْ

बड़ा न्याव चुकाने वाला (दुरुस्त फ़ैसला करने वाला) सब कुछ जानता तुम फ़रमाओ मुझे दिखाओ तो वोह शरीक जो तुम ने उस से मिलाए हैं[77] हिश्त (हरगिज़ ऐसा नहीं) बल्कि

هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۷﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا

वोही है अल्लाह इज़्ज़त वाला हिक्मत वाला और ऐ महबूब हम ने तुम को न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है[78] खुश ख़बरी देता[79]

وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ

और डर सुनाता[80] लेकिन बहुत लोग नहीं जानते[81] और कहते हैं येह वा'दा कब आएगा[82]

69 : या'नी शफ़ाअत करने वालों को ईमानदारों की शफ़ाअत का इज़्न दिया। **70 :** या'नी आस्मान से मींह बरसा कर और ज़मीन से सब्ज़ा उगा कर। **71 :** क्यूं कि इस सुवाल का बजुज़ इस के और कोई जवाब ही नहीं। **72 :** या'नी दोनों फ़रीक़ों में से हर एक के लिये इन दोनों हालों में से एक हाल ज़रूरी है **73 :** और येह ज़ाहिर है कि जो शख़्स सिर्फ़ अल्लाह तआला को रोज़ी देने वाला, पानी बरसाने वाला, सब्ज़ा उगाने वाला जानते हुए भी बुतों को पूजे जो किसी एक ज़र्रा भर चीज़ के मालिक नहीं (जैसा कि ऊपर आयात में बयान हो चुका) वोह यक़ीनन खुली गुमराही में है। **74 :** बल्कि हर शख़्स से उस के अमल का सुवाल होगा और हर एक अपने अमल की जज़ा पाएगा। **75 :** रोज़े क़ियामत **76 :** तो अहले हक़ को जन्नत में और अहले बातिल को दोज़ख़ में दाख़िल करेगा। **77 :** या'नी जिन बुतों को तुम ने इबादत में शरीक किया है मुझे दिखाओ तो किस क़ाबिल हैं, क्या वोह कुछ पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं ? और जब येह कुछ नहीं तो उन को ख़ुदा का शरीक बनाना और उन की इबादत करना कैसी अज़ीम ख़ता है, इस से बाज़ आओ। **78 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत आम्मा है, तमाम इन्सान इस के इहाते में हैं गोरे हों या काले, अरबी हों या अजमी, पहले हों या पिछले, सब के लिये आप रसूल हैं और वोह सब आप के उम्मती। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है : सय्यिदे आलम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं : मुझे पांच चीज़ें ऐसी अता फ़रमाई गईं जो मुझ से पहले किसी नबी को न दी गईं : (1) एक माह की मसाफ़त के रो'ब से मेरी मदद की गई, (2) तमाम ज़मीन मेरे लिये मस्जिद और पाक की गई कि जहां मेरे उम्मती को नमाज़ का वक़्त हो नमाज़ पढ़े और (3) मेरे लिये ग़नीमतें हलाल की गईं जो मुझ से पहले किसी के लिये हलाल न थीं और (4) मुझे मर्तबए शफ़ाअत अता किया गया और (5) अम्बिया ख़ास अपनी क़ौम की तरफ़ मब्ऊस होते थे और मैं तमाम इन्सानों की तरफ़ मब्ऊस फ़रमाया गया। हदीस में सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़ज़ाइले मख़्सूसा का बयान है जिन में से एक आप की रिसालते आम्मा है जो तमाम जिन्नो इन्स को शामिल है। **ख़ुलासा** येह कि हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम ख़ल्क़ के रसूल हैं और येह मर्तबा ख़ास आप का है जो क़ुरआने करीम की आयात और अहादीसे कसीरा से साबित है। सूरए फ़ुरक़ान की इब्तिदा में भी इस का बयान गुज़र चुका है (ख़ाज़न) **79 :** ईमान वालों को अल्लाह तआला के फ़ज़्ल की **80 :** काफ़िरों को उस के अद्ल का। **81 :** और अपने जहल की वज्ह से आप की मुख़ालफ़त करते हैं **82 :** या'नी क़ियामत का वा'दा।

www.dawateislami.net

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ

अगर तुम सच्चे हो तुम फ़रमाओ तुम्हारे लिये एक ऐसे दिन का वा'दा जिस से तुम न एक घड़ी पीछे

ع ٣ النصف سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا

हट सको न आगे बढ़ सको[83] और काफ़िर बोले हम हरगिज़ न ईमान लाएंगे इस

الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ

क़ुरआन पर न उन किताबों पर जो इस से आगे थीं[84] और किसी तरह तू देखे जब ज़ालिम अपने रब के पास

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚۖ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ الْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ

खड़े किये जाएंगे उन में एक दूसरे पर बात डालेगा वोह जो दबे थे[85]

اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَاۤ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ

उन से कहेंगे जो ऊंचे खिंचते थे[86] अगर तुम न होते[87] तो हम ज़रूर ईमान ले आते वोह जो ऊंचे

الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْۤا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى

खिंचते थे उन से कहेंगे जो दबे हुए थे क्या हम ने तुम्हें रोक दिया हिदायत से

بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا

बा'द इस के कि तुम्हारे पास आई बल्कि तुम ख़ुद मुजरिम थे और कहेंगे वोह जो दबे हुए थे

لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَاۤ اَنْ نَّكْفُرَ

उन से जो ऊंचे खिंचते थे बल्कि रात दिन का दाउं (फ़रेब) था[88] जब कि तुम हमें हुक्म देते थे कि **अल्लाह** का

بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَ

इन्कार करें और उस के बराबर वाले ठहराएं और दिल ही दिल में पचताने लगे[89] जब अ़ज़ाब देखा[90] और

جَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْۤ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

हम ने तौक़ डाले उन की गरदनों में जो मुन्किर थे[91] वोह क्या बदला पाएंगे मगर वोही

83 : या'नी अगर तुम मोहलत चाहो तो ताख़ीर मुम्किन नहीं और अगर जल्दी चाहो तो तक़द्दुम मुम्किन नहीं, बहर तक़्दीर इस वा'दे का अपने वक़्त पर पूरा होना। **84 :** तौरैत और इन्जील वग़ैरा। **85 :** या'नी ताबेअ़ और पैरव थे **86 :** या'नी अपने सरदारों से **87 :** और हमें ईमान लाने से न रोकते **88 :** या'नी तुम शबो रोज़ हमारे लिये मक्र करते थे और हमें हर वक़्त शिर्क पर उभारते थे **89 :** दोनों फ़रीक़ ताबेअ़ भी और मत्बूअ़ भी, पैरव भी और उन के बहकाने वाले भी, ईमान न लाने पर **90 :** जहन्नम का। **91 :** ख़्वाह बहकाने वाले हों या उन के कहने में

www.dawateislami.net

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ

जो कुछ करते थे[92] और हम ने जब कभी किसी शहर में कोई डर सुनाने वाला भेजा वहां के आसूदों

مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا

(अमीरों) ने येही कहा कि तुम जो ले कर भेजे गए हम उस के मुन्किर हैं[93] और बोले हम माल और

وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ

औलाद में बढ़ कर हैं और हम पर अ़ज़ाब होना नहीं[94] तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ़ करता है जिस के

يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ ع ٤

लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है[95] लेकिन बहुत लोग नहीं जानते और तुम्हारे माल और

لَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ

तुम्हारी औलाद इस क़ाबिल नहीं कि तुम्हें हमारे क़ुर्ब तक पहुंचाएं मगर वोह जो ईमान लाए और नेकी

صَالِحًا ۪ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ

की[96] उन के लिये दूना दून (कई गुना) सिला[97] उन के अ़मल का बदला और वोह बालाख़ानों में

आने वाले, तमाम कुफ़्फ़ार की येही सज़ा है। **92 :** दुन्या में कुफ़्र और मा'सियत। **93 :** इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर फ़रमाई गई कि आप इन कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब व इन्कार से रन्जीदा न हों, कुफ़्फ़ार का अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ येही दस्तूर रहा है और मालदार लोग इसी त़रह़ अपने माल और औलाद के ग़ुरूर में अम्बिया की तक्ज़ीब करते रहे हैं। **शाने नुज़ूल :** दो शख़्स शरीके तिजारत थे, उन में से एक मुल्के शाम को गया और एक मक्कए मुकर्रमा में रहा। जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मब्ऊ़स हुए और उस ने मुल्के शाम में हुज़ूर की ख़बर सुनी तो अपने शरीक को ख़त़ लिखा और उस से हुज़ूर का मुफ़स्सल ह़ाल दरयाफ़्त किया। उस शरीक ने जवाब में लिखा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी नुबुव्वत का ए'लान तो किया है लेकिन सिवाए छोटे दरजे के ह़क़ीर व ग़रीब लोगों के और किसी ने उन का इत्तिबाअ़ नहीं किया। जब येह ख़त़ उस के पास पहुंचा तो वोह अपने तिजारती काम छोड़ कर मक्कए मुकर्रमा आया और आते ही अपने शरीक से कहा कि मुझे सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का पता बताओ और मा'लूम कर के हुज़ूर की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया आप दुन्या को क्या दा'वत देते हैं और हम से क्या चाहते हैं ? फ़रमाया : बुत परस्ती छोड़ कर एक **अल्लाह** तआ़ला की इबादत करना, और आप ने अह़कामे इस्लाम बताए। येह बातें उस के दिल में असर कर गईं और वोह शख़्स पिछली किताबों का आ़लिम था, कहने लगा कि मैं गवाही देता हूं कि आप बेशक **अल्लाह** तआ़ला के रसूल हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम ने येह कैसे जाना ? उस ने कहा कि जब कभी कोई नबी भेजा गया पहले छोटे दरजे के ग़रीब लोग ही उस के ताबेअ़ हुए, येह सुन्नते इलाहिय्यह हमेशा ही जारी रही। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई **94 :** या'नी जब दुन्या में हम ख़ुशह़ाल हैं तो हमारे आ'माल व अफ़्आ़ल **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द होंगे और ऐसा हुवा तो आख़िरत में अ़ज़ाब नहीं होगा। **अल्लाह** तआ़ला ने उन के इस ख़याले बात़िल का इब्त़ाल फ़रमा दिया कि सवाबे आख़िरत को मईशते दुन्या पर क़ियास करना ग़लत़ है। **95 :** ब त़रीक़े इब्तिला व इम्तिह़ान। तो दुन्या में रोज़ी की कशाइश रिज़ाए इलाही की दलील नहीं और ऐसे ही इस की तंगी **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी की दलील नहीं। कभी गुनहगार पर वुस्अ़त करता है, कभी फ़रमां बरदार पर तंगी, येह उस की ह़िक्मत है, सवाबे आख़िरत को इस पर क़ियास करना ग़लत़ व बे जा है। **96 :** या'नी माल किसी के लिये सबबे क़ुर्ब नहीं सिवाए मोमिने सालेह़ के जो उस को राहे ख़ुदा में ख़र्च करे और औलाद किसी के लिये सबबे क़ुर्ब नहीं सिवाए उस मोमिन के जो उन्हें नेक इ़ल्म सिखाए दीन की ता'लीम दे और सालेह़ व मुत्तक़ी बनाए। **97 :** एक नेकी के बदले दस से ले कर सात सो गुना तक और इस से भी ज़ियादा जितना ख़ुदा चाहे।

www.dawateislami.net

اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓىِٕكَ فِي الْعَذَابِ

अम्नो अमान से हैं[98] और वोह जो हमारी आयतों में हराने की कोशिश करते हैं[99] वोह अ़ज़ाब में

مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ

ला धरे जाएंगे[100] तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और

يَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَمَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾

तंगी फ़रमाता है जिस के लिये चाहे[101] और जो चीज़ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करो वोह उस के बदले और देगा[102] और वोह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला[103]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰۤؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا

और जिस दिन उन सब को उठाएगा[104] फिर फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा क्या येह तुम्हें

يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا

पूजते थे[105] वोह अ़र्ज़ करेंगे पाकी है तुझ को तू हमारा दोस्त है न वोह[106] बल्कि वोह

يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ

जिन्नों को पूजते थे[107] उन में अक्सर उन्हीं पर यक़ीन लाए थे[108] तो आज तुम में एक दूसरे

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا

के भले बुरे का कुछ इख़्तियार न रखेगा[109] और हम फ़रमाएंगे ज़ालिमों से उस आग

عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا

का अ़ज़ाब चखो जिसे झुटलाते थे[110] और जब उन पर हमारी रोशन आयतें[111]

98 : या'नी जन्नत के मनाज़िले बाला में। **99 :** या'नी क़ुरआने करीम पर ज़बाने ता'न खोलते हैं और येह गुमान करते हैं कि अपनी इन बातिल कारियों से वोह लोगों को ईमान लाने से रोक देंगे और उन का येह मक्र इस्लाम के हक़ में चल जाएगा और वोह हमारे अ़ज़ाब से बच रहेंगे, क्यूं कि उन का ए'तिक़ाद येह है कि मरने के बा'द उठना ही नहीं है तो अ़ज़ाब सवाब कैसा। **100 :** और उन की मक्कारियां उन्हें कुछ काम न आएंगी। **101 :** अपने हस्बे हिक्मत। **102 :** दुन्या में या आख़िरत में। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : ख़र्च करो तुम पर ख़र्च किया जाएगा। दूसरी हदीस में है : सदक़े से माल कम नहीं होता, मुआ़फ़ करने से इ़ज़्ज़त बढ़ती है, तवाज़ोअ़ से मर्तबे बुलन्द होते हैं। **103 :** क्यूं कि उस के सिवा जो कोई किसी को देता है ख़्वाह बादशाह लश्कर को या आक़ा ग़ुलाम को या साहिबे ख़ाना अपने इ़याल को वोह अल्लाह तआ़ला की पैदा की हुई और उस की अ़ता फ़रमाई हुई रोज़ी में से देता है। रिज़्क़ और उस से मुन्तफ़ेअ़ होने के अस्बाब का ख़ालिक़ सिवाए अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं, वोही रज़्ज़ाक़े हक़ीक़ी है। **104 :** या'नी उन मुश्रिकीन को **105 :** दुन्या में **106 :** या'नी हमारी इन से कोई दोस्ती नहीं तो हम किस त़रह़ इन के पूजने से राज़ी हो सकते थे, हम इस से बरी हैं। **107 :** या'नी शयात़ीन को कि उन की इत़ाअ़त के लिये ग़ैरे ख़ुदा को पूजते थे। **108 :** या'नी शयात़ीन पर। **109 :** और वोह झूटे मा'बूद अपने पुजारियों को कुछ नफ़्अ़ नुक़्सान न पहुंचा सकेंगे। **110 :** दुन्या में। **111 :** या'नी आयाते क़ुरआन ज़बाने सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से।

www.dawateislami.net

بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ

पढ़ी जाएं तो कहते हैं[112] येह तो नहीं मगर एक मर्द कि तुम्हें रोकना चाहते हैं तुम्हारे बाप दादा

اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

के मा'बूदों से[113] और कहते हैं[114] येह तो नहीं मगर बोहतान जोड़ा हुवा और काफ़िरों ने हक़ को

لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٣﴾ وَمَاۤ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ

कहा[115] जब उन के पास आया येह तो नहीं मगर खुला जादू और हम ने उन्हें कुछ किताबें

كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ ؕ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ

न दीं जिन्हें पढ़ते हों न तुम से पहले उन के पास कोई डर सुनाने वाला आया[116] और इन से

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَاۤ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۠ قف

अगलों ने[117] झुटलाया और येह उस के दसवें को भी न पहुंचे जो हम ने उन्हें दिया था[118] फिर उन्हों ने मेरे रसूलों को झुटलाया

فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾ ع قُلْ اِنَّمَاۤ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ ع ٥ ١١

तो कैसा हुवा मेरा इन्कार करना[119] तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें एक ही नसीहत करता हूं[120] कि अल्लाह के लिये खड़े रहो[121]

مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۠ قف مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا

दो दो[122] और अकेले अकेले[123] फिर सोचो[124] कि तुम्हारे उन साहिब में जुनून की कोई बात नहीं वोह तो नहीं मगर तुम्हें

112 : हज़रते सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत **113 :** या'नी बुतों से। **114 :** कुरआन शरीफ़ की निस्बत **115 :** या'नी कुरआन शरीफ़ को **116 :** या'नी आप से पहले मुश्रिकीने अ़रब के पास न कोई किताब आई न रसूल जिस की त़रफ़ अपने दीन की निस्बत कर सकें तो येह जिस ख़याल पर हैं उन के पास उस की कोई सनद नहीं वोह उन के नफ़्स का फ़रेब है। **117 :** या'नी पहली उम्मतों ने मिस्ल कुरैश के रसूलों की तक्ज़ीब की और उन को **118 :** या'नी जो कुव्वत व कस्रते माल व औलाद व तूले उम्र पहलों को दी गई थी मुश्रिकीने कुरैश के पास तो उस का दसवां हिस्सा भी नहीं, इन के पहले तो उन से त़ाक़त व कुव्वत, मालो दौलत में दस गुना से ज़ियादा थे। **119 :** या'नी उन को ना पसन्द रखना और अ़ज़ाब देना और हलाक फ़रमाना या'नी पहले मुकज़्ज़िबीन ने जब मेरे रसूलों को झुटलाया तो मैं ने अपने अ़ज़ाब से उन्हें हलाक किया और उन की त़ाक़त व कुव्वत और मालो दौलत कोई चीज़ भी काम न आई, इन लोगों की क्या हक़ीक़त है इन्हें डरना चाहिये। **120 :** अगर तुम ने इस पर अ़मल किया तो तुम पर हक़ वाज़ेह हो जाएगा और तुम वसाविस व शुबुहात और गुमराही की मुसीबत से नजात पाओगे, वोह नसीहत येह है **121 :** महूज़ त़लबे हक़ की निय्यत से, अपने आप को त़रफ़ दारी और तअ़स्सुब से ख़ाली कर के **122 :** ताकि बाहम मश्वरा कर सको और हर एक दूसरे से अपनी फ़िक्र का नतीजा बयान कर सके और दोनों इन्साफ़ के साथ ग़ौर कर सकें **123 :** ताकि मज्मअ़ और इज़्दिहाम से त़बीअ़त मुतवह्हिश न हो और तअ़स्सुब और त़रफ़ दारी व मुक़ाबला व लिह़ाज़ वग़ैरा से त़बीअ़तें पाक रहें और अपने दिल में इन्साफ़ करने का मौक़अ़ मिले। **124 :** और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत ग़ौर करो कि क्या जैसा कि कुफ़्फ़ार आप की त़रफ़ जुनून की निस्बत करते हैं इस में सच्चाई का कुछ शाएबा भी है ? तुम्हारे अपने तजरिबे में, कुरैश में या नौए इन्सान में कोई शख़्स भी इस मर्तबे का आ़क़िल नज़र आया है ? क्या ऐसा ज़हीन ऐसा साइबुर्राए देखा है ? ऐसा सच्चा ऐसा पाक नफ़्स कोई और भी पाया है ? जब तुम्हारा नफ़्स हुक्म (फ़ैसला) कर दे और तुम्हारा ज़मीर मान ले कि हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इन औसाफ़ में यक्ता हैं तो तुम यक़ीन जानो।

www.dawateislami.net

نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ

डर सुनाने वाले[125] एक सख़्त अ़ज़ाब के आगे[126] तुम फ़रमाओ मैं ने तुम से इस पर कुछ अज्र मांगा हो

فَهُوَ لَكُمْ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ

तो वोह तुम्हीं को[127] मेरा अज्र तो अल्लाह ही पर है और वोह हर चीज़ पर गवाह है तुम फ़रमाओ

اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا

बेशक मेरा रब हक़ का इल्क़ा फ़रमाता है[128] बहुत जानने वाला सब ग़ैबों का तुम फ़रमाओ हक़ आया[129] और

يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ

बातिल न पहल करे और न फिर (लौट) कर आए[130] तुम फ़रमाओ अगर मैं बहका तो अपने ही बुरे को बहका[131]

وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ تَرٰٓى

और अगर मैं ने राह पाई तो उस के सबब जो मेरा रब मेरी तरफ़ वह्य फ़रमाता है[132] बेशक वोह सुनने वाला नज़्दीक है[133] और किसी तरह तू देखे[134]

اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٥١﴾ ۙ وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَ

जब वोह घबराहट में डाले जाएंगे फिर बच कर न निकल सकेंगे[135] और एक क़रीब जगह से पकड़ लिये जाएंगे[136] और कहेंगे हम इस पर ईमान लाए[137] और

اَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾ ۖ وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَ

अब वोह इसे क्यूंकर पाएं इतनी दूर जगह से[138] कि पहले[139] तो इस से कुफ़्र कर चुके थे और

125 : अल्लाह तआ़ला के नबी 126 : और वोह अ़ज़ाबे आख़िरत है। 127 : या'नी मैं नसीहत व हिदायत और तब्लीग़ व रिसालत पर तुम से कोई अज्र नहीं त़लब करता 128 : अपने अम्बिया की त़रफ़। 129 : या'नी क़ुरआन व इस्लाम 130 : या'नी शिर्क व कुफ़्र मिट गया, न उस की इब्तिदा रही न उस का इआ़दा, मुराद येह है कि वोह हलाक हो गया। 131 : कुफ़्फ़ारे मक्का हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहते थे कि आप गुमराह हो गए। (مَعَاذَاللّٰه تَعَالٰى) अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को हुक्म दिया कि आप उन से फ़रमा दें कि अगर येह फ़र्ज़ किया जाए कि मैं बहका तो इस का वबाल मेरे नफ़्स पर है। 132 : हिक्मत व बयान की, क्यूं कि राहयाब होना उसी की तौफ़ीक़ व हिदायत पर है। अम्बिया सब मा'सूम होते हैं गुनाह उन से नहीं हो सकता और हुज़ूर तो सय्यिदुल अम्बिया हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ख़ल्क़ को नेकियों की राहें आप के इत्तिबाअ़ से मिलती हैं, बा वुजूद जलालते मन्ज़िलत और रिफ़अ़ते मर्तबत के आप को हुक्म दिया गया कि ज़लालत की निस्बत अ़ला सबीलिल फ़र्ज़ अपने नफ़्स की त़रफ़ फ़रमाएं ताकि ख़ल्क़ को मा'लूम हो कि ज़लालत का मन्शा इन्सान का नफ़्स है, जब इस को उस पर छोड़ दिया जाता है इस से ज़लालत पैदा होती है और हिदायत ह़ज़रते हक़ عَزَّوَجَلَّ की रह्मत व मौहिबत से ह़ासिल होती है, नफ़्स उस का मन्शा नहीं। 133 : हर राहयाब और गुमराह को जानता है और उन के अ़मल व किरदार से बा ख़बर है, कोई कितना ही छुपाए किसी का ह़ाल उस से छुप नहीं सकता। अ़रब के एक मायानाज़ शाइर इस्लाम लाए तो कुफ़्फ़ार ने उन से कहा कि क्या तुम अपने दीन से फिर गए और इतने बड़े शाइर और ज़बान के माहिर हो कर मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए ? उन्हों ने कहा : हां वोह मुझ पर ग़ालिब आ गए, क़ुरआने करीम की तीन आयतें मैं ने सुनीं और चाहा कि उन के क़ाफ़िये पर तीन शे'र कहूं, हर चन्द कोशिश की, मेह़नत उठाई, अपनी तमाम क़ुव्वत सर्फ़ कर दी मगर येह मुम्किन न हो सका, तब मुझे यक़ीन हो गया कि येह बशर का कलाम नहीं वोह आयतें "قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ" से "سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ" तक हैं। (روح البیان) 134 : कुफ़्फ़ार को मरने या क़ब्र से उठने के वक़्त या बद्र के दिन 135 : और कोई जगह भागने और पनाह लेने की न पा सकेंगे 136 : जहां भी होंगे क्यूं कि कहीं भी हों अल्लाह तआ़ला की पकड़ से दूर नहीं हो सकते, उस वक़्त हक़ की मा'रिफ़त के लिये मुज़्त़र होंगे। 137 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर। 138 : या'नी अब मुकल्लफ़ होने के मह़ल से दूर हो कर तौबा व ईमान कैसे पा सकेंगे 139 : या'नी अ़ज़ाब

www.dawateislami.net

يَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۵۳﴾ وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا

बे देखे फेंक मारते हैं[140] दूर मकान से[141] और रोक कर दी गई उन में और उस में

يَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ﴿۵۴﴾ ع ۶ ۱۲

जिसे चाहते हैं[142] जैसे उन के पहले गुरौहों से किया गया था[143] बेशक वोह धोका डालने वाले शक में थे[144]

اٰيَاتُهَا ۴۵ ۳۵ سُوْرَةُ فَاطِرٍ مَّكِّيَّةٌ ۴۳ رُكُوْعَاتُهَا ۵

सूरए फ़ातिर मक्किय्या है, इस में पेंतालीस आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْۤ

सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला फ़िरिश्तों को रसूल करने वाला[2] जिन के

اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى

दो दो तीन तीन चार चार पर हैं बढ़ाता है आफ़्रीनिश (पैदाइश) में जो चाहे[3] बेशक **अल्लाह**

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱﴾ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ

हर चीज़ पर क़ादिर है **अल्लाह** जो रह्मत लोगों के लिये खोले[4] उस का कोई रोकने वाला नहीं

وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲﴾ يٰۤاَيُّهَا

और जो कुछ रोक ले तो उस की रोक के बा'द उस का कोई छोड़ने वाला नहीं और वोही इ़ज़्ज़तो ह़िक्मत वाला है ऐ

النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ

लोगो ! अपने ऊपर **अल्लाह** का एह़सान याद करो[5] क्या **अल्लाह** के सिवा और भी कोई ख़ालिक़ कि आस्मान और

देखने से पहले **140** : या'नी बे जाने कह गुज़रते हैं, जैसा कि उन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में कहा था कि वोह शाइ़र हैं, साह़िर हैं, काहिन हैं ह़ालां कि उन्हों ने कभी हुज़ूर से शे'रो सेह़्र व कहानत का सुदूर न देखा था। **141** : या'नी सिद्क़ो वाक़िइय्यत से दूर, कि उन के उन मत़ाइन (त़ा'नों) को सिद्क़ से क़ुर्ब व नज़्दीकी भी नहीं। **142** : या'नी तौबा व ईमान में। **143** : कि उन की तौबा व ईमान वक़्ते यास क़बूल न फ़रमाई गई। **144** : ईमानिय्यात के मुतअ़ल्लिक़। **1** : सूरए फ़ातिर मक्किय्या है, इस में पांच रुकूअ़, पेंतालीस आयतें, नव सो सत्तर कलिमे, तीन हज़ार एक सो तीस हुरूफ़ हैं। **2** : अपने अम्बिया की त़रफ़। **3** : फ़िरिश्तों में और इन के सिवा और मख़्लूक़ में। **4** : मिस्ल बारिश व रिज़्क़ व सिह़्ह़त वग़ैरा के। **5** : कि उस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को फ़र्श बनाया, आस्मान को बिग़ैर किसी सुतून के क़ाइम किया, अपनी राह बताने और ह़क़ की दा'वत देने के लिये रसूलों को भेजा, रिज़्क़ के दरवाज़े खोले।

www.dawateislami.net